प्राकृत ग्रन्थमाला - 19

मध्यकालीन मागधी प्राकृत व्याकरण एवं सन्दर्भ

प्रधान-सम्पादक
प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री
(कुलपति)

लेखक एवं सम्पादक
डॉ. सुदर्शन मिश्र
(एम.ए, पीएच.डी., डी.लिट्.)

पालि-प्राकृत योजना
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
जनकपुरी, नई दिल्ली

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
प्रस्तावना	
1. मध्यकालीन प्राकृत-भाषाएँ	1–21
1. मागधी	3
2. अर्धमागधी	4
3. शौरसेनी	5
4. महाराष्ट्री	6
5. पैशाची	7
6. चूलिका-पैशाची	7
7. कैकेय पैशाची	8
8. शौरसेन पैशाची	8
9. पाञ्चाल पैशाची	8
10. गौड पैशाची	9
11. मागध पैशाची	9
12. ब्राचड पैशाची	9
13. सूक्ष्मभेदी पैशाची	9
14. भाषाशुद्ध संकीर्ण पैशाची	10
15. पदार्द्धशुद्ध संकीर्ण पैशाची	10
16. चतुष्पदशुद्ध संकीर्ण पैशाची	10
17. अशुद्ध संकीर्ण पैशाची	10
18. आवन्ती	11
19. प्राच्या	11
20. ढक्की/टक्की	11
21. बाह्लीकी	12
22. औत्कली	12
23. औड्री	13
24. दाक्षिणात्या	13
25. आन्ध्री	14
26. आभीरी	14
27. चाण्डाली	14

(नाचती हुई संतोषपूर्वक) यदि सिन्धुराज (जयद्रथ) के वध के दिन के समान अर्जुन युद्धकर्म प्रतिदिन करने लगें, तो मेरा घर मांस तथा रुधिर से परिपूर्ण कोष्ठागार वाला हो जायेगा। (घूमकर, चारों ओर देखकर) न जाने, रुधिर-प्रिय कहाँ होगा? अतःइस युद्धभूमि में प्रिय भर्ता रुधिरप्रिय को खोजती हूँ। (घूमकर) अच्छा, पुकारती हूँ। अरे रुधिरप्रिय! रुधिरप्रिय! इधर आओ, इधर आओ।

(ततः प्रविशति तथाविधो राक्षसः = तब उसी प्रकार राक्षस प्रवेश करता है।)

राक्षसः- (श्रमं नाटयन्)

पच्चग्गहदाणं मंशए जइ उण्हे लुहिले अ लब्भइ।
ता एशे मह पलिश्शमे खणमेत्तं एव्व लहु णश्शइ ॥2 ॥

[प्रत्यग्रहतानां मांसकं यद्युष्णं रुधिरं च लभ्यते।
तदेष मम परिश्रमः क्षणमात्रमेव लघु नश्यते ॥]

(थकावट का अभिनय करते हुए)

यदि तत्काल मारे गये लोगों का मांस और गरम खून मिल जाय तो मेरी थकावट क्षणमात्र में ही अतिशीघ्र विनष्ट हो जाय।

(राक्षसी पुनर्व्याहरति=राक्षसी पुनः पुकारती है।)

राक्षसः- (आकर्ण्य) अले के एशे मं शद्दावेदि। (विलोक्य) अले कहं पिआ मे वशागन्धा। (उपसृत्य) वशागन्धे, कीश मं शद्दावेशि।

लुहिलाशवपाणमत्तिए लणहिण्डन्तखलन्तगत्तिए।
शद्दाअशि कीश मं पिए! पुलिशशहश्शं हदं शुणीअदि ॥3 ॥

[अरे क एष मां शब्दापयति। अरे कथं प्रिया मे वसागन्धा। वसागन्धे, कस्मान्मां शब्दायसे।

रुधिरासवपानमत्तिके रणहिण्डनस्खलद्गात्रिके।
शब्दायसे कस्मान्मां प्रिये पुरुषसहस्रं हतं श्रूयते ॥]

(सुनकर) अरे, यह कौन मुझे पुकार रही है? (देखकर), अरे! क्या मेरी प्रिया वसागन्धा है? (पास जाकर) वसागन्धे! मुझे किसलिए पुकार रही हो?

हे रुधिररूपी मदिरा के पान से मत्त, युद्धभूमि में भ्रमण के कारण शिथिल अंगो वाली प्रिये! मुझे किसलिए पुकारा रही हो? सुना जाता है कि हजारों लोग मारे गये।

राक्षसी- अले लुहिलप्पिआ! इदं क्खु मए तुह कालणादो पच्चग्गहदश्श कश्शवि लाएशिणो शलीलावयवहूदं पहूदवशाशिणिग्घं कोण्हं णवलुहिलं अग्गमंशं अ आणीदं। ता पिवाहि णं।

[अरे रुधिरप्रिय! इदं खलु मया तवकारणात्प्रत्यग्रहतस्य कस्यापि राजर्षेः शरीरावयवभूतं प्रभूतवसास्निग्धं कोष्णं नवरुधिर- मग्रमांसं चानीतम्। तत्पिबैतत्।]

अरे रुधिरप्रिय! यह मैं तुम्हारे कारण अभी-अभी मारे गये किसी राजर्षि के

(नाचती हुई संतोषपूर्वक) यदि सिन्धुराज (जयद्रथ) के वध के दिन के समान अर्जुन युद्धकर्म प्रतिदिन करने लगें, तो मेरा घर मांस तथा रुधिर से परिपूर्ण कोष्ठागार वाला हो जायेगा। (घूमकर, चारों ओर देखकर) न जाने, रुधिर-प्रिय कहाँ होगा? अतःइस युद्धभूमि में प्रिय भर्ता रुधिरप्रिय को खोजती हूँ। (घूमकर) अच्छा, पुकारती हूँ। अरे रुधिरप्रिय! रुधिरप्रिय! इधर आओ, इधर आओ।

(ततः प्रविशति तथाविधो राक्षसः = तब उसी प्रकार राक्षस प्रवेश करता है।)

राक्षसः- (श्रमं नाटयन्)

पच्चग्गहदाणं मंशए जइ उण्हे लुहिले अ लब्भइ।
ता एशे मह पलिश्शमे खणमेत्तं एव्व लहु णश्शइ ॥2 ॥

[प्रत्यग्रहतानां मांसकं यद्युष्णं रुधिरं च लभ्यते।
तदेष मम परिश्रमः क्षणमात्रमेव लघु नश्यते॥]

(थकावट का अभिनय करते हुए)

यदि तत्काल मारे गये लोगों का मांस और गरम खून मिल जाय तो मेरी थकावट क्षणमात्र में ही अतिशीघ्र विनष्ट हो जाय।

(राक्षसी पुनर्व्याहरति=राक्षसी पुनः पुकारती है।)

राक्षसः- (आकर्ण्य) अले के एशे मं शद्दावेदि। (विलोक्य) अले कहं पिआ मे वशागन्धा। (उपसृत्य) वशागन्धे, कीश मं शद्दावेशि।

लुहिलाशवपाणमत्तिए लणहिण्डन्तखलन्तगत्तिए।
शद्दाअशि कीश मं पिए! पुलिशशहश्शं हदं शुणीअदि ॥3 ॥

[अरे क एष मां शब्दापयति। अरे कथं प्रिया मे वसागन्धा। वसागन्धे, कस्मान्मां शब्दायसे।

रुधिरासवपानमत्तिके रणहिण्डनस्खलद्गात्रिके।
शब्दायसे कस्मान्मां प्रिये पुरुषसहस्रं हतं श्रूयते॥]

(सुनकर) अरे, यह कौन मुझे पुकार रही है? (देखकर), अरे! क्या मेरी प्रिया वसागन्धा है? (पास जाकर) वसागन्धे! मुझे किसलिए पुकार रही हो?

हे रुधिररूपी मदिरा के पान से मत्त, युद्धभूमि में भ्रमण के कारण शिथिल अंगो वाली प्रिये! मुझे किसलिए पुकारा रही हो? सुना जाता है कि हजारों लोग मारे गये।

राक्षसी- अले लुहिलप्पिआ! इदं क्खु मए तुह कालणादो पच्चग्गहदश्श कश्शवि लाएशिणो शलीलावयवहूदं पहूदवशाशिणिग्घं कोण्हं णवलुहिलं अग्गमंशं अ आणीदं। ता पिवाहि णं।

[अरे रुधिरप्रिय! इदं खलु मया तवकारणात्प्रत्यग्रहतस्य कस्यापि राजर्षेः शरीरावयवभूतं प्रभूतवसास्निग्धं कोष्णं नवरुधिर- मग्रमांसं चानीतम्। तत्पिबैतत्।]

अरे रुधिरप्रिय! यह मैं तुम्हारे कारण अभी-अभी मारे गये किसी राजर्षि के

पालि एवं प्राकृत योजना के अन्तर्गत
प्रकाशित प्राकृत ग्रन्थों की सूची

1. प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ (लेख संग्रह)
2. प्राकृत भाषा और व्याकरण के विविध आयाम (लेख संग्रह)
3. आख्यानमणिकोशः (हिन्दी अनुवाद)
4. नाट्यशास्त्र में प्राकृत-सन्दर्भ (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
5. किरियासारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
6. णाणसारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
7. कसायपाहुडसुत्तं (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
8. रयणसारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
9. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में प्रतिपादित दार्शनिक मीमांसा
10. भारतीय दर्शन और साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान (लेख संग्रह)
11. UNIVERSAL VALUES OF PRAKRIT TEXTS (लेख संग्रह)
12. भगवदी आराहणा (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
13. गणिविज्जा-सुत्तं (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
14. पउमचरियं - प्रथम भाग (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
15. गाहारयणकोसो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
16. दंसणकहरयणकरंडु, प्रथम भाग (हिन्दी अनुवाद)
17. मागधी प्राकृत की विभाषाएँ
18. मागधी प्राकृत के प्राचीनतम अभिलेख एवं मागधी प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी कोश

पालि-प्राकृत योजना
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
56-57 सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058
ईमेल - rskspp2009@gmail.com फोन - 011-28520979, फैक्स- 011-28520976

978-93-85791-38-3